सोशल मीडिया और हिंदी

सं. डॉ. कल्पना गवली

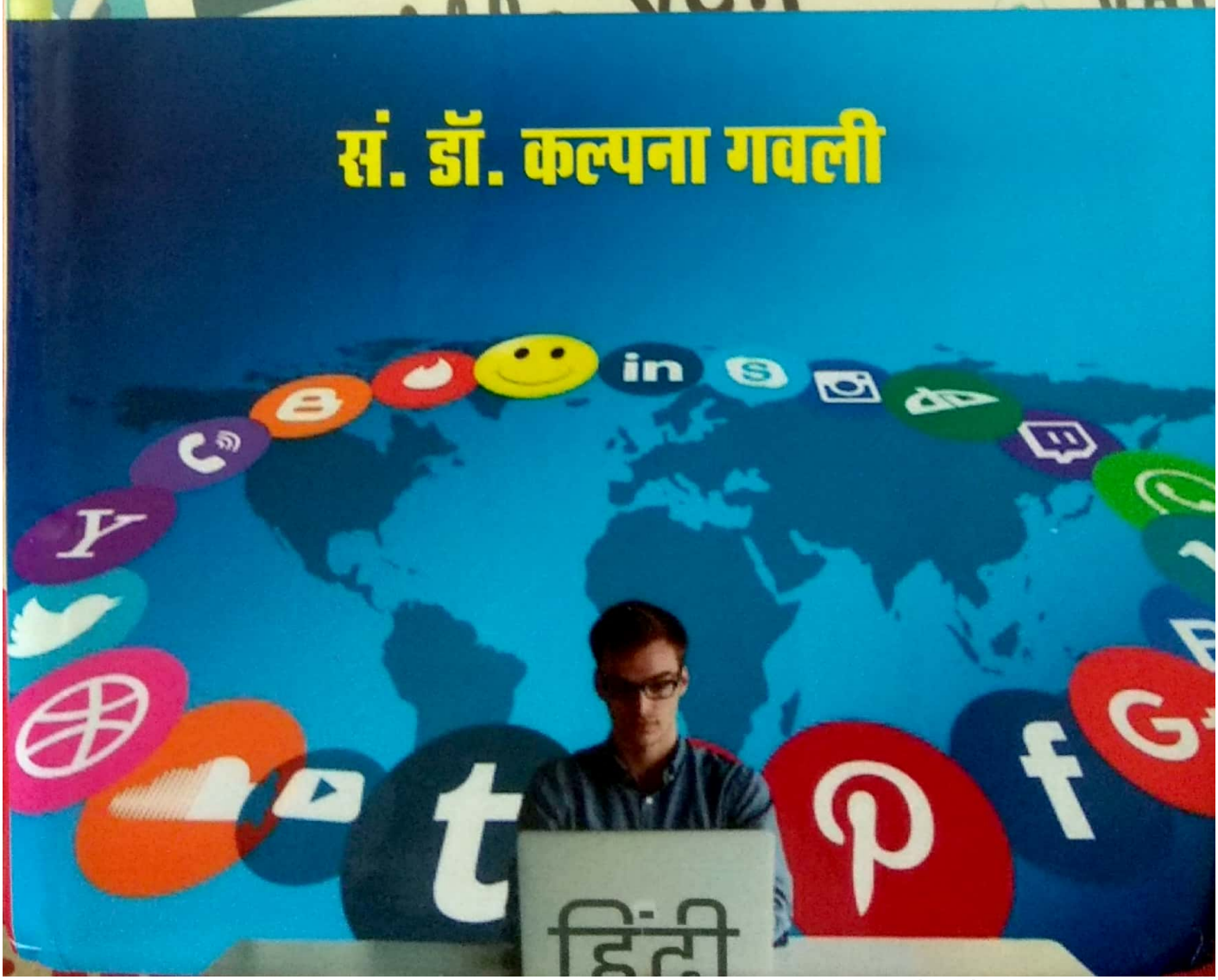

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-93-87941-68-7

पुस्तक	:	सोशल मीडिया और हिंदी
संपादक	:	डॉ. कल्पना गवली
स्वत्वाधिकार	:	संपादक
प्रकाशक	:	माया प्रकाशन 6A/540, आवास विकास हंसपुरम् कानपुर-208 021 Mo. : 09451877266, 07618879266
E- mail	:	mayaprakashankanpur@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम 2020
मूल्य	:	1300.00 मात्र
शब्द सज्जा	:	विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	श्री पूजा प्रेस, कानपुर

Soshal Mediya Aur Hindi

Edited By : Dr. Kalpana Gavli

Price : Rs. One Thousand Three Hundred Only.

Scanned with CamScanner

23. सोशल मीडिया और सकारात्मकता
डॉ. अनिलकुमार एम. माकडिया 145

24. सोशल मीडिया और सकारात्मकता
डॉ. रविन्द्र सिंह 150

25. सोशल मीडिया और सकारात्मकता
प्रा. वर्षा डी. पटेल 157

26. सोशल मीडिया का बढ़ता सकारात्मक वर्चस्व
डॉ. तृप्तिबाला एम. शुक्ला,
पियुष एस. पंचोली 162

27. सोशल मीडिया और हिंदी
डॉ. उमा मेहता 167

28. सोशल मीडिया की सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका
शिप्रा शुक्ला 171

29. सोशल मीडिया और समाज
पियूष कुमार 179

30. सोशल मीडिया और हिंदी
डॉ प्रज्ञा तिवारी 183

31. सोशल मीडिया और समाज
डॉ. संजय भाई चौधरी 188

32. सोशल मीडिया की समाज में भूमिका
डॉ. रमेश कुमारी 195

33. सोशल मीडिया और हिंदी
डॉ. अताउल्लाह खान युसूफजई 201

34. सोशल मीडिया और हिंदी
डॉ. भावना एन. सावलिया 204

35. सोशल मीडिया : वरदान या अभिशाप
डॉ. अनिला मिश्रा 210

Scanned with CamScanner

28

सोशल मीडिया की सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका

मानव सभ्यता के आरम्भ से आज तक, समाज की भूमिका उसके विकास में उल्लेखनीय रही है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, और समाज में रहकर ही वह अपने मानव दायित्वों का निर्वहन करता है। समाज विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। समाज के भीतर मौजूद संबंधों की एक व्यवस्था जिन्हें सामाजिक सम्बन्ध कहते हैं, उसके सूत्र बहुआयामी है। समय के साथ इन सामाजिक संबंधों में निरन्तर बदलाव होते रहे हैं। सामाजिक व्यवस्था में आने वाले विविध परिवर्तन अथवा नवीन स्वरूपों को ही सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। समाज के भीतर रहने वाले किसी भी मनुष्य के विभिन्न सामाजिक तत्वों में परिवर्तन उत्पन्न करने के अनेक कारण होते हैं। उदाहरण के लिए हमारा रहन–सहन, वेश–भूषा, खान–पान, बोली–भाषा, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कर्म। ये सभी तत्व निरन्तर गतिशील रहते हैं।

सैद्धांतिक तौर पर समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन के दो रूप निर्धारित किये,जिसमे"स्पेंगलर" द्वारा प्रतिपादित सामाज़िक परिवर्तन का चक्रीय सिद्धांत तथा "कांट" द्वारा प्रतिपादित सामाजिक परिवर्तन का रेखीय सिद्धांत उल्लेखनीय है। समय के साथ और भी अनेक सैद्धान्तिक स्थापनाएं अस्तित्व में आयीं, जिन्होंने सामाजिक परिवर्तन के कारणों को अपने–अपने ढंग से समझने और समझाने का सफल प्रयास किया। इन सामाजिक परिवर्तनों के पीछे कार्य कर रहे अनेक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कारण होते हैं। इन्हीं में एक प्रमुख कारण जो सामाजिक परिवर्तन की सबसे बड़ी वजह बनकर उभरा है, वह है जनसंचार (जोशी, 2015)।

द्वितीय विश्व युद्ध के लोकतंत्र की स्थापना ज्यादातर राष्ट्रों में हुई। लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण हेतु जिन स्तंभों की नींव रखी गयी, उनमे चौथा महत्वपूर्ण स्तम्भ मीडिया है, जिसने समाज में एक वैचारिक बहस की स्वतंत्रता को आगे बढ़ाकर अभिव्यक्ति के समान द्वार सबके लिए खोल दिए, जिस कारण

Scanned with CamScanner